युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज के 51वीं एवं राष्ट्रसंत महंत अवेद्यनाथ जी महाराज के 6वीं पुण्यतिथि

के उपलक्ष्य में आयोजित

प्रेस विज्ञप्ति

श्रीरामकथा ज्ञान–यज्ञ

गोरखपुर 02 सितम्बर, 2020। गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर में **युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज जी** की पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित वाल्मीकि रामायण पर आधारित संगीतमय रामकथा के चौथे दिन कथा व्यास **अनन्त श्री विभूषित जगतगुरु स्वामी रामानुजाचार्य श्री राघवाचार्य जी महाराज** ने कहा कि मन ही मनुष्यों के बंधन व मुक्ति का कारण है। मन को नियंत्रण करने के लिए ही भगवान की कथा सुननी चाहिए। क्योंकि कथा श्रवण से मन स्वयं निर्मल हो जाता है और निर्मल मन में ज्ञान का उदय होता है। इस प्रकार ज्ञान से भगवान में भक्ति और प्रबल हो जाती है। भगवान की कथा में ऐसा रस है, जिससे कभी तृप्ति नहीं होती, चाहे हम इस कथा को हजारो बार सुन लें, यही इसकी विशेषता है। यदि मन शुद्ध नहीं होता है विषयों की आसक्ति नहीं छूट रही है मन पर नियंत्रण नहीं हो पा रहा है तो कथा श्रवण करना शुरू कर देना चाहिए बार–बार भगवान के चरित्र को सुनना चाहिए रघुनंदन भगवान श्री राम की कथा मन को निर्मल बना देती है इसके अतिरिक्त मन को निर्मल करने वाला दूसरा कोई साधन नहीं है।

महापुरुषों का चरण जहां पड़ता है, वहां की भूमि पवित्र हो जाती है। इसिलिए महापुरुषों को तीर्थंकर कहा जाता है। वे जहां चले जाएं वही स्थान तीर्थ हो जाता है। जिनके घर पर संत, महापुरुषों तथा महात्माओं का सम्मान न हो, वह घर श्मशान के समान हो जाता है। बड़े भाग्य से संत का आगमन होता है। संत का सतकार करने से हमारे अहंकार दूर होते हैं। हमारे मन में दयालुता के भाव पैदा होते हैं, मन स्वतः निर्मल हो जाता है। समाज में जब जब बड़ी से बड़ी समस्याएं उत्पन्न होती हैं तो कहीं न कहीं उसका निराकरण करने के लिए संत महापुरुष ही आगे आते हैं।

श्रीरामकथा को विस्तार देते हुए कथा व्यास ने कहा कि जब राक्षसों ने महर्षि विश्वामित्र को यज्ञ नहीं करने दे रहें थे। तो महर्षि राक्षसों के आतंक से परेशान होकर प्रभु श्रीराम को राक्षसों के अंत के लिए लिवाने जाते हैं। जब विश्वामित्र श्रीराम के सम्मुख आते हैं तो राम के रूप को देखकर इस प्रकार मोहित होते हैं कि स्वयं अपना शरीर भूल जाते हैं। उनका रोम–रोम पुलकित हो जाता है, क्योंकि महर्षि को पता था कि राम के रूप में उन्होंने साक्षात भगवान के रूप का दर्शन कर लिया और उनके जन्म–जन्मान्तर के तप के फलिभूति होने का यही क्षण है। इसलिए महर्षि के आनन्द का ठिकाना नहीं रहता है। विश्वामित्र जी ने दशरथ से कहा कि मैं आपके पुत्र राम और लक्ष्मण को जानता हूॅ कि ये कौन हैं, परन्तु आप पिता होकर के भी इनको नहीं जानते हैं। ये परमब्रह्म परमात्मां हैं। इनका अवतार किसी विशेष प्रयोजन से हुआ है। इस प्रकार जब तक भक्ति मार्ग से ज्ञान नहीं होगा भगवान को आसानी से पहचाना नहीं जा सकता।

जब भगवान से संबंध होता है तभी प्रेम का उदय होता है लेकिन यदि अहंकार आपको सम्बन्ध बनाने से रोकता है तो आपका कल्याण सम्भव नहीं है। भगवान के दिव्य दर्शन के लिए निर्मल मन चाहिए और अहंकार मन को निर्मल नहीं रहने देता है।

कथा व्यास ने कहा कि भगवान भाव के वशीभूत होते हैं। भगवान की आंखों में साक्षात सूर्य का प्रकाश होता है, ह्रदय चंद्रमा के समान शीतल होता है, मुख में अग्नि का निवास होता है, ऐसे प्रकाश पुंज भगवान को हम क्या दे सकते हैं। वह परम ब्रह्म परमात्मा जब सगुण साकार

रूप में प्रकट होता है तो परम श्रेयवान व आनंद को प्रदान करने वाला होता है। दशरथ जी जैसा भाग्यवान कौन होगा जिसके वहां साक्षात परम ब्रम्ह उनके पुत्र बनकर अवतरित हुए हो वह भी चार चार रूपों में।

कथा के बीच में कथा व्यास द्वारा अनेक भजन गाए गयें, जिस पर भक्तगण झूमते रहे। सम्पूर्ण कथा **'श्रीगोरखनाथ मन्दिर'** के फेसबुक पेज एवं यूट्यूब चैनल के माध्यम से सजीव प्रसारण हुआ तथा कथा सभागार में 80 श्रद्धालुओं की बैठने की व्यवस्था थी और सोशल डिस्टेंसिंग को ध्यान में रखते हुए कथा का श्रवण किये।

कथा का समापन आरती एवं प्रसाद वितरण के साथ हुआ। संचालन डॉ0 श्रीभगवान सिंह जी ने किया। इस अवसर पर प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ जी, महन्त मिथिलेशनाथ जी महाराज, डॉ0 अरविन्द कुमार चतुर्वेदी, बृजेशमणि मिश्र, डॉ0 रोहित कुमार मिश्र, डॉ0 दिग्विजय शुक्ल, विनय गौतम, विकास जालान, महेश पोद्दार आदि उपस्थित रहें।